SEMESTER - II

CC- 8

Society and economy in Indian History

- **Unit – 5 : Industrial Development**

  Medival India

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 8604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

दिल्ली सल्तनत में तकनीकी विकास

- तकनीकी विकास
- कृषि
- उद्योग
- व्यापार वाणिज्य
- शहरीकरण

तकनीकी विकास

सिंचाई - रहट

वस्त्र निर्माण - नददाफ (धुनिया)

कागज निर्माण -

भवन निर्माण - गुम्बद मेहराब

सैन्य तकनीक - नाल,जीन,रकाब

सल्तनत काल में हुए तकनीकी विकास ने अर्थव्यवस्था को गतिशीलता प्रदान की! वस्तुतः तुर्को के आगमन के पश्चात भारतीय परिवेश में सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन हुए! मोहम्मद हबीब के अनुसार पहले की सामंती अर्थव्यवस्था अब शहरी अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई और इसमें तकनीकी विकास की भूमिका महत्वपूर्ण रही!

कृषि क्षेत्र में रहट का प्रयोग व्यापक रूप में हुआ! फलतः गहरे कुँए से पानी निकालकर सिंचाई करना सुगम हो गया! अतः कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई! इसी तरह बीज बोने के लिए बीज वापित यंत्र (seed drill) का प्रयोग किया गया! फलतः कृषि कार्यो में आसानी हुई और उत्पादन में वृद्धि हुई! इतना ही नहीं फसल चक्र प्रणाली तथा बागानी फसलों की खेती के कारण ही कृषि का विकास हुआ!

वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में धुनिया (नददाफ) एवं चरखे का प्रयोग आरम्भ हुआ! धुनिया की मदद से रुई से बीज को अलग करना आसान हुआ! फलतः रुई उत्पादन में वृद्धि हुई और इससे वस्त्र उत्पादन में वृद्धि

हुई! इसी तरह रेशम कीट पालन के विकास में रेशम उद्योग को बढ़ावा मिला! इस काल में कागज़ निर्माण तकनीक के विकास से कागज़ उद्योग विकसित हुआ! अतः रोज़गार के नवीन अवसर बढे और व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ी!

इस काल में भवन निर्माण तकनीक में गुम्बद और मेहराब के तकनीक से विशाल भवनों का निर्माण किया गया! अतः कारीगरों को रोज़गार मिला! भवन मिर्माण सामग्री की मांग बढ़ने से व्यापार को बढ़ावा मिला!

कुतुबनुमा (दिशा सूचक यन्त्र) के विकास से समुद्री यातायात में सुगमता हुई, जिससे व्यापारिक गतिविधियाँ तीव्र हुई! सैन्य क्षेत्र में हुए तकनीकी विकास ने राज्य की शक्ति में वृद्धि की! नाल, रकाब,जीन के निर्माण ने अश्वरोही सेना को गतिशील बनाया! फलतः साम्राज्य विस्तार में सहायक सिद्ध हुआ तथा इससे लौह - उद्योग का विकास हुआ! इसी तरह कुफतगिरी (अलंकृत तलवार) की मांग विदेशों में अत्यधिक थी! फलतः धातु उद्योग को बढ़ावा मिला! इस तरह तकनीकी विकास दिल्ली सल्तनत के आर्थिक विकास का आधार बना!

कृषि

दिल्ली सल्तनत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था! अतः शासकों ने कृषि विकास पर बल दिया! सर्वप्रथम ग्यासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली सल्तनत में नहरों का निर्माण कर सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि की! तो आगे फ़िरोज़शाह तुगलक ने दिल्ली, हरयाणा क्षेत्र में अनेक नहरों का निर्माण कराया! परंपरागत फसलों के साथ-साथ कपास,गन्ना, जैसी नकदी फसलों की खेती पर बल दिया गया! मोहम्मद - बिन - तुगलक ने कृषि के विकास के लिए दीवान-ए-कोही नामक स्वतंत्र विभाग की स्थापना की! इस तरह सल्तनत कालीन कृषि की सर्वाधिक महत्वपुर्ण विशेषता किसानो के द्वारा बड़ी संख्या में फसलों का उत्पादन करना था! अतः उत्पादन अधिशेष में वृद्धि हुई! सल्तनत काल में कृषि योग्य भूमि कई श्रेणियों में बंटी थी! राज्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण वाली भूमि ख़ालिसा भूमि कहलाती थी, जहां राजस्व वसूली सीधे राजकीय ख़ज़ाने में जमा की जाती थी तो दूसरी श्रेणी इक्ता भूमि थी, जिसे प्रशासनिक सेना के लिए अधिकारियो को

प्रदान किया जाता था और फ़वाजिल (आर्थिक अधिशेष) इक्तादार द्वारा केन्द्रीय ख़ज़ाने में जमा किया जाता था! इसी तरह भूमि की एक अन्य श्रेणी थी, जो कर मुक्त होती थी, जिन्हे इनाम, वक्फ़ भूमि के नाम से जाना जाता था!

उद्योग एवं शिल्प

दिल्ली सल्तनत में विविध शिल्पों का विकास हुआ, जिसमे वस्त्र उद्योग सर्वाधिक उल्लेखनीय है!

वस्त्र उद्योग - नददाफ (धुनिया) एवं चरखे के विकास से वस्त्र निर्माण उद्योग को बढ़ावा मिला! गुजरात, देवगिरि, ढाका वस्त्र उत्पादन के प्रमुख केंद्र थे! साथ ही रंगाई उद्योग भी विकसित अवस्था में था! ऐसे रंगीन वस्त्रों की मांग विदेशों में प्रमुख रूप से थी! मोहम्मद-बिन-तुगलक के समय ऐसे राजकीय कारखाने का उल्लेख मिलता है, जहां ४ हज़ार बुनकर वस्त्र निर्माण में लगे थे!

धातु - उद्योग

इस काल में धातु प्रोद्योगिकी उन्नत अवस्था में थी! लोहा, तांबा, कांसा, सोना, चाँदी से विभिन्न वस्तुएँ तथा सिक्के बनाए जाते थे! धातु से बनी अलंकृत तलवारे विशेष रूप में प्रसिद्ध थी!

भवन - निर्माण - उद्योग

सल्तनत काल में चुने,गारे के माध्यम से गुम्बद और मेहराब की संरचना से युक्त विशाल भवनों का निर्माण बड़ी संख्या में हुआ, जिसके फलस्वरूप भवन - निर्माण एक प्रमुख उद्योग के रूप में विकसित हुआ! अलाउद्दीन के काल में लगभग १० हज़ार शिल्पकार भवन - निर्माण कार्य में संलग्न थे!

अन्य - उद्योग

चर्म उद्योग विकसित अवस्था में था! गुजरात में निर्मित नीले-काले रंग की बनी चराइयाँ मध्य एशिया में अत्यंत लोकप्रिय थी! इसके अतिरिक्त कागज़ उद्योग, तेल उद्योग, जहाज निर्माण उद्योग आदि विकसित अवस्था में थे! इतिहासकार अफिक ने कारखानों के उत्पादन में मूल्य तथा फ़िरोज़-बिन-तुगलक के बारे में लिखा है कि फ़िरोज़ कहा करता था कि

उसके कारखानों के उत्पादों से आमदनी (तसर्रुफ़) मुल्तान के लगान की आमदनी से अधिक थी! यही कारण है कि फ़िरोज़ ने कारखानों से प्राप्त अतिरिक्त आमदनी से राजकोष को समृद्ध बनाया और कारखानों में वाणिज्यिक उत्पादन (commercial production) कि व्यवस्था की! लेकिन फ़िरोज़ के अन्य प्रशासनिक व्यवस्था की तरह कारखानों की व्यवस्था में भी भ्रष्टाचार और अपव्यय की समस्या बनी हुई थी, जो कि कारखानों के पतन का एक प्रमुख कारण बना!

मुद्रा प्रणाली विकसित अवस्था में थी बने से अब्बे सिक्के सल्तनत कालीन साम्राज्य में चलायमान थे! सामान्य रूप से एक सोने का सिक्का दस चाँदी के सिक्को के बराबर था! चाँदी का एक टंका, ताम्बे के ४८ जीतल के बराबर था तथा प्रत्येक जीतल ४ दांग के बराबर था और प्रत्येक दांग २१/२ दिशम के बराबर था! दांग और दिशम भी ताम्बे के बने होते थे, परन्तु उनका वजन जीतल से काम होता था! टांका से काम वजनी चाँदी के सिक्को का विवरण भी हमें पुरातात्विक व साहित्यिक वर्णनो में प्राप्त होता था! जैसा कि फ़िरोज़ शाह ने ' शशगनी ' नमक सिक्का प्रचलित किया जो टंका का १/६ माना जाता था! मोहम्मबद-बिन-तुगलक द्वारा प्रतिक मुद्रा चलाने का रोचक प्रयोग किया गया मगर योजना अपने समय से आगे की थी और असफल रही! सल्तनत काल के उन्नत व्यापार-वाणिज्य ने शहरीकरण को प्रोत्साहित किया! व्यापार में आंतरिक व बाह्य व्यापार किए जाते थे तथा वस्तुओ व उन्नत धातुओं का आदान-प्रदान किया जाता था!

सल्तनत कालीन उद्योगों का पतन

सल्तनत काल से पूर्व भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, परन्तु महमूद गजनी, गोरी तथा इस काल के अन्य मुस्लिम आक्रांताओ ने भारत की आर्थिक स्थिति में असंतुलन पैदा कर दिया था! इन आक्रमणों ने बाद की राजनीतिक उथल-पुथल से तत्कालीन समय के कृषि उद्योग एवम् व्यापार को गहरा आघात हुआ! वही खिल्जी व तुगलक शासको के अपव्यय से भी आर्थिक दशा कमज़ोर होती चली गई! अलाउद्दीन की सारी आर्थिक योजनाएँ उसके व्यक्तिगत स्वार्थो से प्रेरित थी, जिसके कारण आर्थिक स्थिति सुधरने के बावजूद बिगड़ते चली गई! मोहम्मद-बिन-तुगलक की योजनाएँ यद्यपि जनकल्याणकारी ही थी, परन्तु उनके असफल होने के कारण जनता पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी पड़ा और राजकोष भी रिक्त होता चला गया! उसके काल के विद्रोहों और प्राकृतिक आपदाओं ने रही-सही कसार पूरी कर

दी!फ़िरोज़ ने करो का भर हल्का किया तथा सिंचाई सुविधाएँ देकर कृषि को उन्नत करने का प्रयास किया, परन्तु इनका प्रभाव अस्थायी था! फ़िरोज़ के बाद तैमूर के भयानक आक्रमण तथा सैय्यद व लोही सुल्तानों की उद्योगों के प्रति उपेक्षा की नीति ने भारत की आर्थिक स्थिति को निर्बल करने का कार्य किया!

सल्तनत शासको में आर्थिक नीतियों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने की कमी थी! वे आंतरिक व बाह्य युद्धों में ही अधिक व्यस्त रहे! उन्होंने कोई ऐसी दृढ़ अथवा स्थायी आर्थिक नीति नहीं अपनाई जिससे कृषि उद्योग एवं वाणिज्य - व्यापार के क्षेत्रो में प्रगति होती और देश तथा जनता समृद्ध हो पाते! धन विभाजन की विषमता और प्राकृतिक आपदाओं ने भी आर्थिक स्थिति को दुर्बल किया! परन्तु फिर भी सल्तनत कालीन शासको की आर्थिक कार्यो (कृषि, उद्योग,व्यापार,वाणिज्य, मुद्रा) के बनस्पत देश में आंतरिक सम्पन्नता बनी रही!